रूसी परी कथा

फेनिस्ट बाज़

चित्र: एस. कोवलजोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

एक समय की बात है, एक किसान रहता था. उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई और उसकी तीन बेटियां थीं. बूढ़ा आदमी घर के काम करने में मदद के लिए एक नौकरानी रखना चाहता था, लेकिन उसकी सबसे छोटी बेटी मर्युष्का ने कहा:

"नौकर न रखें पिताजी, मैं खुद घर का काम संभाल लूंगी."

और इस तरह मर्युष्का ने घर संभालना शुरू कर दिया, और वो एक कुशल गृहणी बन गई. ऐसा कुछ भी नहीं था जो वह नहीं कर सकती थी, और वो जो भी करती वो बहुत अच्छा करती थी. पिता, मर्युष्का से बहुत प्यार करते थे और वो इतनी चतुर, मेहनती और सुंदर बेटी पाकर खुश थे, क्योंकि मर्युष्का बहुत सुन्दर थी! लेकिन जहां तक उसकी दो बहनों की बात थी, वे बदसूरत थीं, और ईर्ष्या और लालच से भरी हुई थीं, और वे हमेशा अपने चेहरों को रंगती-पोतती रहती थीं, पाउडर लगाती थीं और हमेशा फैंसी कपड़े पहनती थीं. वे अपना पूरा दिन नए गाउन पहनने और पहले से बेहतर दिखने की कोशिश में बिताती थीं. लेकिन कोई भी चीज़ उन्हें लंबे समय तक खुश नहीं कर पाती थी - न तो गाउन, न शॉल, न ही ऊंची एड़ी के जूते.

एक दिन किसान बाज़ार जाने वाला था. उसने अपनी बेटियों से पूछा:

"मैं तुम्हारे लिए क्या खरीदूं, मेरी प्यारी बेटियों, मैं तुम्हारे क्या लाऊं जो तुम्हें खुश कर दे?"

"हमारे लिए एक-एक शॉल खरीदकर लाएं," दोनों बड़ी बेटियों ने कहा. "और ध्यान रखें कि उस पर सोने के बने बड़े-बड़े फूल हों."

लेकिन मर्युष्का वहीं खड़ी रही और वो एक शब्द भी नहीं बोली.

किसान ने कहा:

"और तुम क्या चाहोगी, मर्युष्का?"

"मेरे लिए फेनिस्ट बाज़ का एक पंख खरीदें, प्रिय पिता."

किसान चला गया और कुछ समय बाद शॉल लेकर वापस आया. परन्तु वो कोई पंख नहीं लाया, क्योंकि बहुत खोजने पर भी उसे कहीं भी पंख नहीं मिला.

कुछ दिनों बाद वो फिर बाजार दुबारा गया.

"अच्छा, बेटियों, मैं इस बार तुम्हारे लिए क्या लाऊं?" उसने पूछा.

फिर दोनों बड़ी बेटियों ने उत्सुकता से उत्तर दिया:

"हम दोनों के लिए चांदी जड़ित जूतों की एक जोड़ी खरीदकर लाएं."

लेकिन मर्युष्का ने फिर कहा:

"मेरे लिए फेनिस्ट बाज़ का एक पंख खरीदें, प्रिय पिताजी."

किसान पूरे दिन बाज़ार में घूमता रहा. उसने जूते खरीदे, लेकिन उसे कोई पंख नहीं मिला, और इसलिए वो पंख के बिना ही वापस लौटा.

कुछ दिनों बाद वो तीसरी बार बाज़ार के लिए निकला, और उसकी दो बड़ी बेटियों ने कहा:

"इस बार आप हम दोनों के लिए नए गाउन खरीदकर लाएं."

लेकिन मर्युष्का ने फिर कहा:

"मेरे लिए फेनिस्ट बाज़ का एक पंख खरीदें, प्रिय पिताजी."
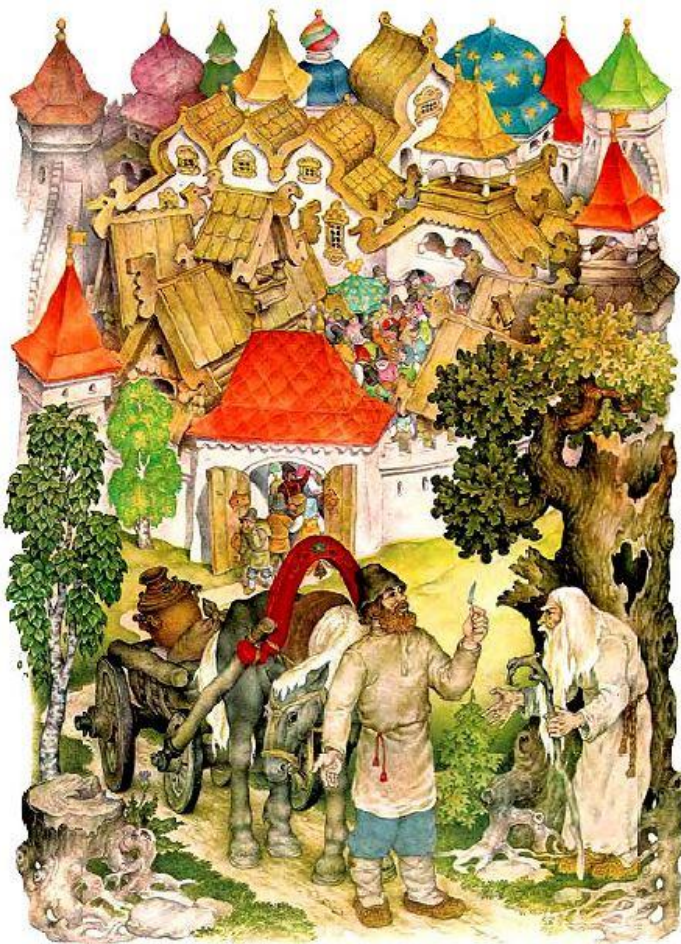
किसान पूरे दिन बाज़ार में घूमता रहा, लेकिन फिर भी उसे कोई पंख नहीं मिला. जब वो शहर से बाहर निकला, तो रास्ते में उसे एक छोटा बूढ़े आदमी मिला.

"शुभ दिन, दादाजी!" किसान ने कहा.

"तुम्हारा दिन शुभ हो, मेरे भले आदमी. तुम कहां जा रहे हो?"

"मैं अपने गांव वापस जा रहा हूं, दादाजी. और मैं काफी परेशान हूं क्योंकि मुझे नहीं पता कि मैं क्या करूं. मेरी सबसे छोटी बेटी ने मुझसे फेनिस्ट बाज़ का एक पंख खरीदने को कहा था, लेकिन वो मुझे कहीं भी नहीं मिला."

"मेरे पास वह पंख है जिसकी आपको जरूरत है. वो एक अच्छा पंख है, लेकिन क्योंकि आप एक भले इंसान हैं, इसलिए मैं आपको वो पंख दे दूंगा."

फिर छोटे बूढ़े आदमी ने पंख निकाला और उसे किसान को दे दिया. वो किसी भी अन्य पंख की तरह ही दिखता था. जब वो घर की ओर चला तो किसान ने सोचा कि भला वो पंख मर्युष्का के किस काम का होगा.

किसान घर लौटा और उसने अपनी बेटियों को उपहार दिए. दोनों बड़ी बहनों ने अपने नए गाउन पहने और वे मर्युष्का को देखकर खूब हंसीं:

"तुम पहली से ही मूर्ख थीं, और तुम हमेशा ही मूर्ख रहोगी! अपने बालों में पंख लगाओ - फिर देखो तुम उसके साथ कितनी अच्छी दिखोगी!"

मर्युष्का ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन वो पूरे दिन उनसे दूर रही. और जब पूरा परिवार सो गया, तो उसने पंख को फर्श पर फेंका और धीरे से कहा:

"मेरे पास आओ, फेनिस्ट बाज़, मेरे प्रिय!"

फिर देखते ही देखते उसके सामने एक युवक प्रकट हुआ जो इतना सुंदर था, जितना पहले कभी किसी ने नहीं देखा था.

युवक ने मर्युष्का के साथ कई घंटे बिताए और सुबह फर्श से टकराकर वो फिर से बाज़ में बदल गया. मर्युष्का ने खिड़की खोली और फिर बाज़ नीले आकाश में उड़ गया.

तीन रातों तक मर्युष्का ने युवक का स्वागत सत्कार किया. दिन के समय वो बाज़ के भेष में नीले आकाश में उड़ जाता था और जब रात होती तो वो मर्युष्का के पास वापस आता और एक सुंदर युवक में बदल जाता था.
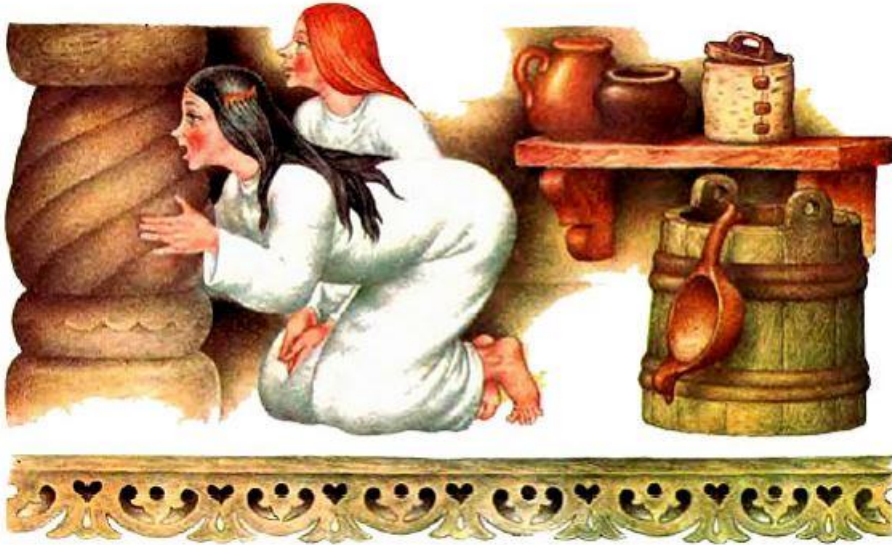
लेकिन चौथे दिन मर्युष्का की दोनों दुष्ट बहनों को उसके बारे में पता चल गया और उन्होंने तुरंत जाकर अपने पिता को उसके बारे में बताया.

पिता ने कहा, "बेहतर होगा कि तुम दोनों अपना ध्यान रखो और अपनी बहन को अकेले छोड़ दो, मेरी बेटियों."

"बहुत अच्छा," उन्होंने सोचा, "हम देखेंगे कि आगे क्या होता है."

फिर दोनों बहनों ने खिड़की के कांच में धारदार चाकुओं की एक कतार चिपका दी और फिर खुद छिप गईं. वो यह देखने के लिए इंतजार करने लगीं कि आगे क्या होगा.
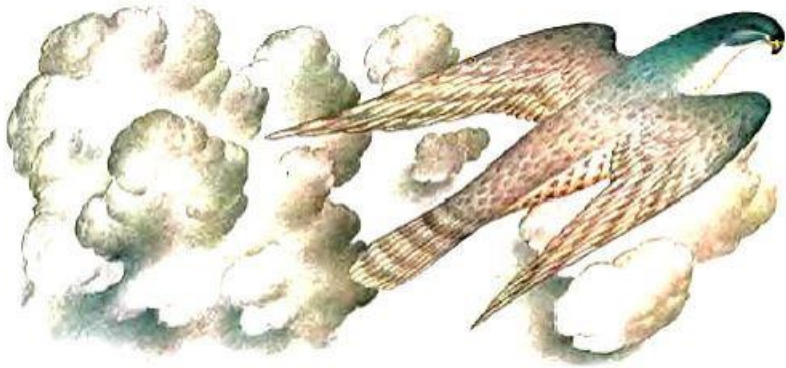
थोड़ी देर बाद एक चमकीला बाज़ दिखाई दिया. वो खिड़की तक उड़कर आया, लेकिन वो मिर्युष्का के कमरे में नहीं जा सका. वो इधर-उधर फड़फड़ाने लगा. वो कांच से लगातार टकराता रहा और अंत में उसका पूरा सीना चाकुओं की धार से कट गया. लेकिन मर्युष्का सो रही थी और उसने कुछ नहीं सुना.

बाज़ ने कहा:

"अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत होगी तो तुम मुझे जरूर पाओगी, लेकिन वो काम आसान नहीं होगा. तुम मुझे तब तक नहीं पा सकोगी जब तक कि तुम तीन जोड़ी लोहे के जूते नहीं पहनती हो, और तीन लोहे की छड़ियां नहीं तोड़ती हो, और तीन लोहे की टोपियां नहीं फाड़ती हो."
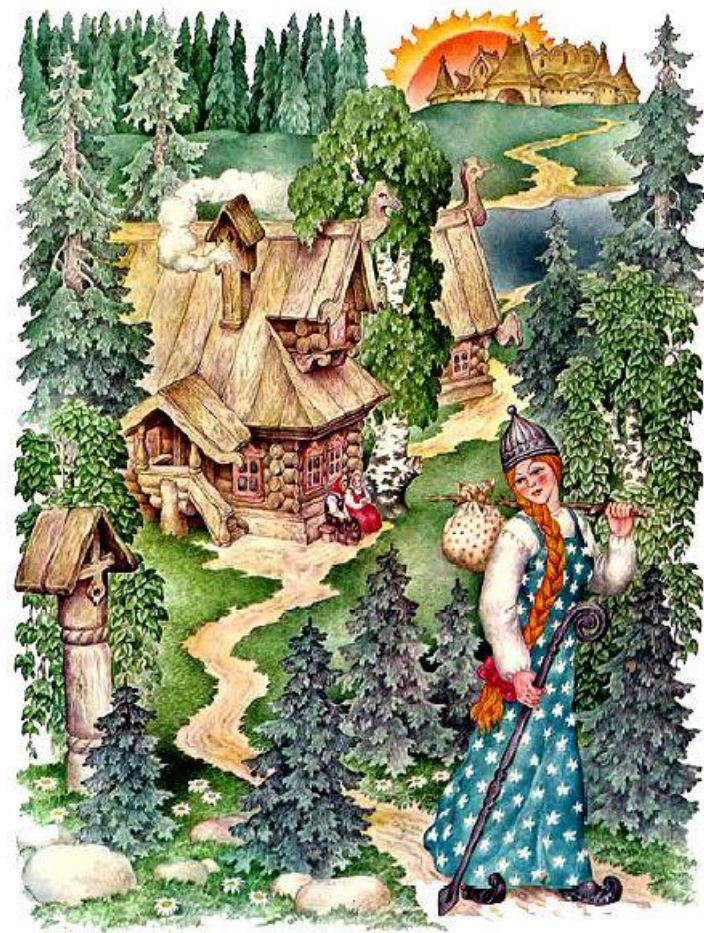
मर्युष्का ने उसकी बात सुनी और वह बिस्तर से उठकर खिड़की की ओर दौड़ी. लेकिन तब तक बाज़ चला गया था, और खिड़की पर सिर्फ उसके खून की बूंदें ही बची थीं. मर्युष्का फूट-फूट कर रोने लगी और उसके आंसुओं ने खून को धो डाला.

फिर वो अपने पिता के पास गई और बोली:

"पिताजी आप मुझे डांटे नहीं, लेकिन और मुझे अपने चुने और कठिन रास्ते पर जाने दें. अगर मैं ज़िंदा रही तो हम फिर से मिलेंगे; अगर मैं मर गई, तो फिर वो भी ठीक होगा."

किसान को अपनी पसंदीदा बेटी से अलग होने का बहुत दुख था, लेकिन आखिरकार उसने अपनी बेटी को जाने दिया.

इसलिए मर्युष्का ने जाकर तीन जोड़ी लोहे के जूते, तीन लोहे की छड़ियां और तीन लोहे की टोपियाँ मंगवाईं. और फिर वो अपने दिल के प्रिय - फेनिस्ट बाज़ - को खोजने के लिए निकल पड़ी.

मर्युष्का खुले मैदानों, अंधेरे जंगलों और ऊंचे पहाड़ों से होकर गुज़री. पक्षियों ने आनंदमय गीतों से उसका दिल खुश कर दिया, झरनों ने उसके सफेद चेहरे को धो दिया, और अंधेरे जंगलों ने उसका स्वागत किया. कोई भी मर्युष्का को नुकसान नहीं पहुंचा सकता था, क्योंकि सभी जंगली जानवर - भूरे भेड़िये, भूरे भालू और लाल लोमड़ियां - उसके आसपास झुंड में आ आते-जाते थे. मर्युष्का चलती रही और अंतत: उसके लोहे के जूतों की एक जोड़ी घिस गई, एक लोहे की छड़ी टूट गई और एक लोहे की टोपी फट गई.
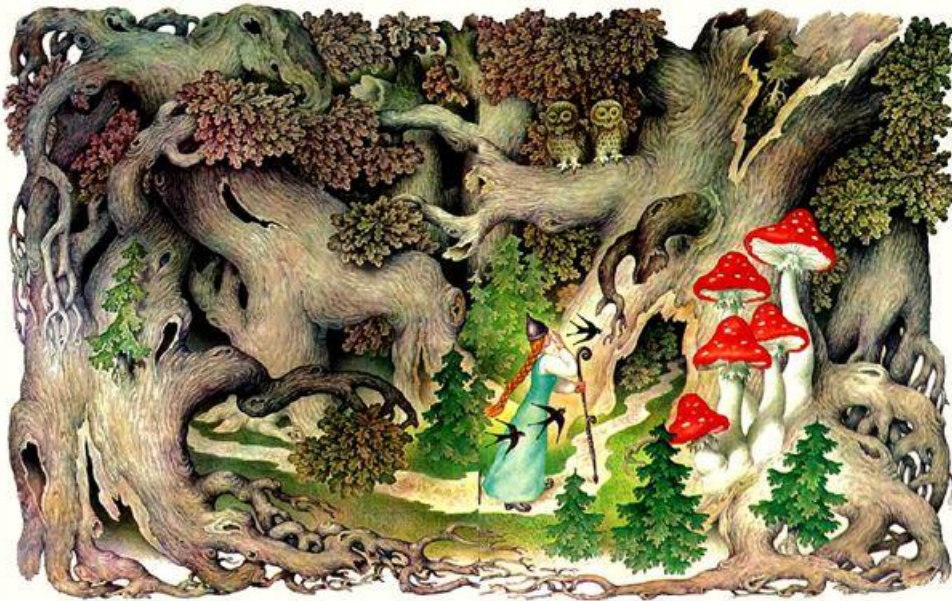
मर्युष्का जंगल में एक घास के मैदान में आई और वहां उसने मुर्गी के पैरों पर, गोल-गोल घूमती हुई एक छोटी सी झोपड़ी देखी.

"छोटी झोपड़ी, छोटी झोपड़ी," मर्युष्का ने कहा, "कृपया अपनी पीठ पेड़ों की ओर, और अपना चेहरा मेरी ओर कर लो. मुझे अंदर आकर रोटी खाने दो."

छोटी झोपड़ी ने अपनी पीठ पेड़ों की ओर कर ली और अपना चेहरा मर्युष्का की ओर कर लिया और फिर मर्युष्का अंदर चली गई. और उसने वहां बाबा यगा नाम की चुड़ैल को देखा. चुड़ैल की नाक हड्डीदार और डरावनी थी.

बाबा यगा की नजर मर्युष्का पर पड़ी और वो बुदबुदाई:

"अरे वाह, रूसी खून, जो मुझे पहले कभी नहीं मिला, अब मुझे अपने दरवाजे से उसकी गंध आ रही है. वहां कौन आया है? कहां से? और वो कहां जा रही है?"
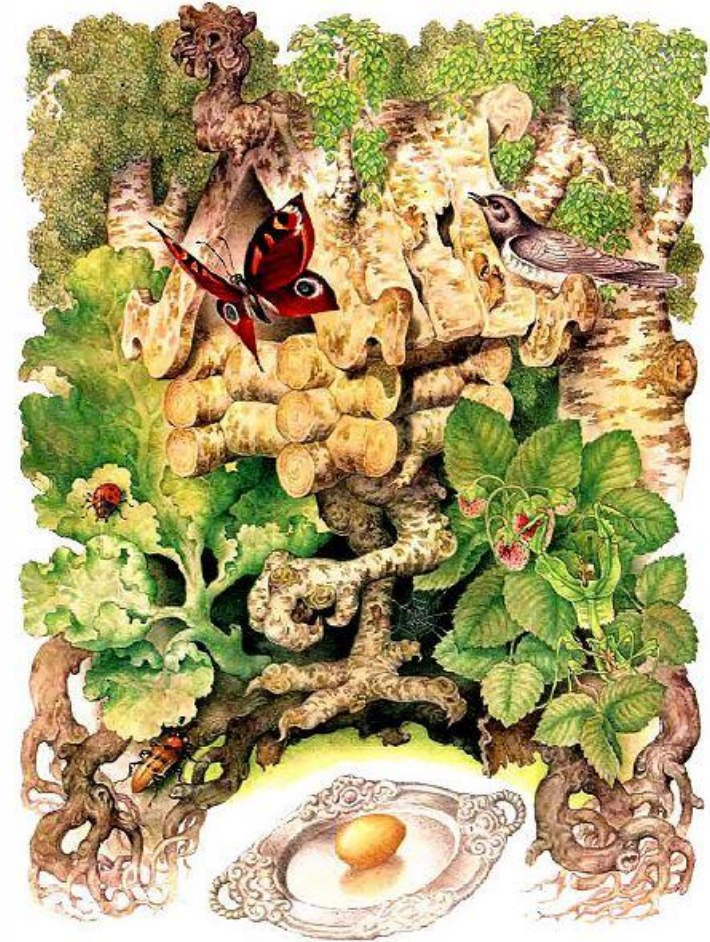
"मैं फेनिस्ट बाज़ की तलाश कर रही हूं, दादी प्रिय."

"वो बहुत दूर है, मेरे प्यारी! तुम्हें उसे ढूंढने के लिए थ्राइस-नाइन लैंड्स से होकर थ्रिस-टेन ज़ारडोम तक जाना होगा. थ्राइस-टेन ज़ारडोम की ज़ारित्सा एक बेहद दुष्ट जादूगरनी है. जादूगरनी ने बाज़ को एक पीने के लिए एक दवा दी और जब उसका नशा उसपर चढ़ा, तो उसने उससे शादी कर ली. लेकिन मैं तुम्हारी जरूर मदद करूंगी. देखो, यह चांदी की तश्तरी और सोने का अंडा ले लो. जब तुम तीन-दस ज़ारडोम में जाओ, तो ज़ारित्सा के पास एक नौकरानी के रूप में जाना. दिन का काम पूरा होने के बाद, चांदी की तश्तरी लेना और उस पर सोने का अंडा रखना. अंडा खुद अपने आप चारों ओर घूमना शुरू कर देगा. अगर वे उसे खरीदना चाहें तो उसे मत बेंचना - उसके बदले में तुम फेनिस्ट बाज़ से मिलने के लिए कहना."

मर्युष्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और फिर वो अपने रास्ते पर चल पड़ी. जंगल में अंधेरा छा गया था और वो आगे बढ़ने से बहुत डर रही थी, तभी अचानक उसने एक बिल्ली को अपनी ओर आते देखा. बिल्ली, मर्युष्का के पास आई और गुर्राते हुए बोली:

"डरना मत, मर्युष्का, क्योंकि आगे चलकर स्थिति और भी बदतर होगी, लेकिन तुम आगे बढ़ती रहना और कभी पीछे मुड़कर मत देखना."
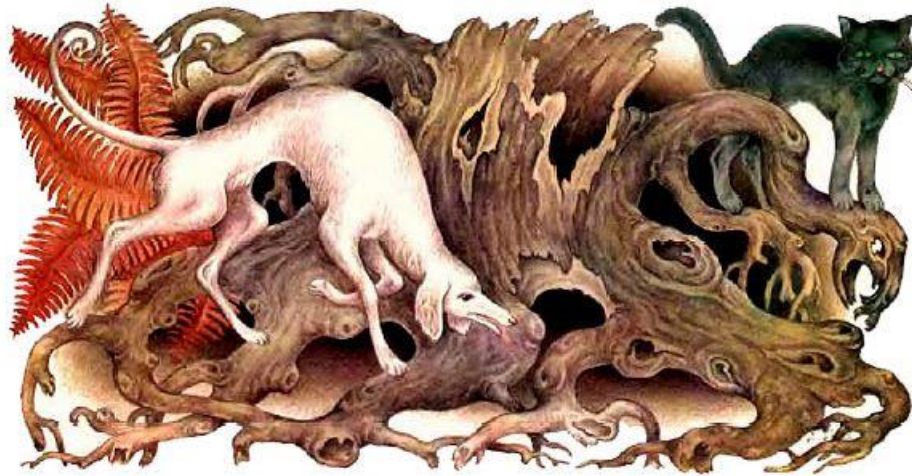
बिल्ली उसके पैरों से रगड़कर गायब हो गई और मर्युष्का आगे बढ़ी. वो जंगल में जितनी गहराई में जाती गई, जंगल उतना ही गहरा होता गया. इतना चलने के कारण अब उसके लोहे के जूतों की दूसरी जोड़ी घिस गई उसकी दूसरी लोहे की छड़ी टूट गई और उसकी दूसरी लोहे की टोपी फट गई, और वो मुर्गियों के पैरों पर एक छोटी सी झोपड़ी में आ गई, जिसके चारों ओर एक चारदीवारी थी जिसपर पर चमकदार खोपड़ियां लटकी थीं.

मर्युष्का ने कहा:

"छोटी झोपड़ी, छोटी झोपड़ी, कृपया अपनी पीठ पेड़ों की ओर और अपना चेहरा मेरी ओर कर लो. मुझे अंदर आकर रोटी खाने दो."

छोटी झोपड़ी ने अपनी पीठ पेड़ों की ओर कर ली और अपना चेहरा मर्युष्का की ओर कर लिया, और मर्युष्का अंदर चली गई. और वहां बाबा-यागा, नाम की चुड़ैल थी जिसकी नाक हड्डीदार और बहुत डरावनी थी.
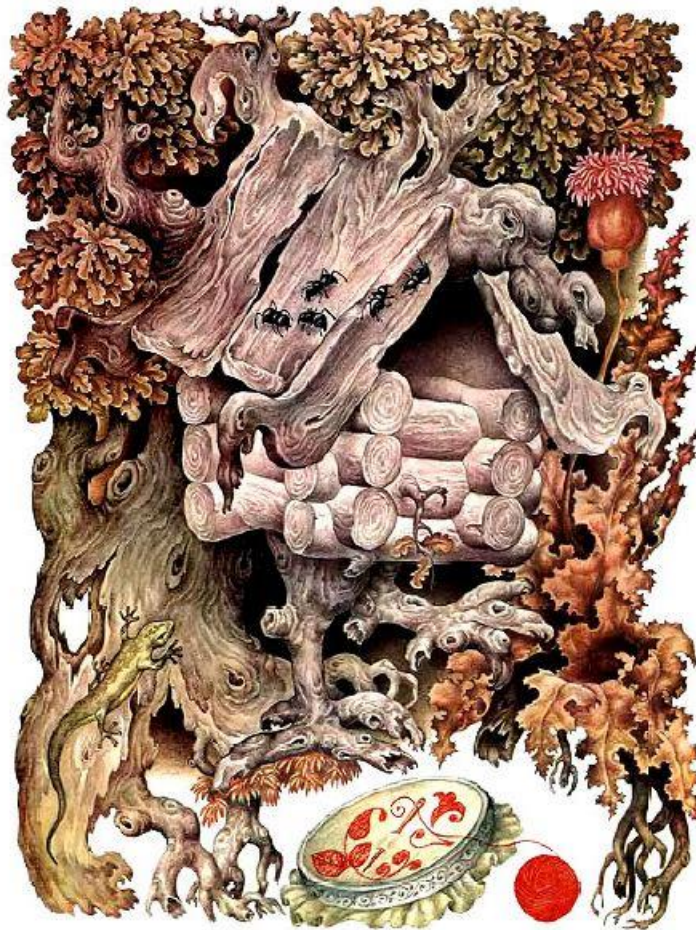
बाबा यगा की नजर मर्युष्का पर पड़ी और वो बुदबुदाई:

"अरे वाह, रूसी खून, जो मुझे पहले कभी नहीं मिला, अब मुझे अपने दरवाजे से उसकी गंध आ रही है. वहां कौन आया है? कहां से? और वो कहां जा रही है?"

"मैं फेनिस्ट बाज़ की तलाश कर रही हूं, दादी प्रिय."

"और क्या तुम मेरी बहन के पास से आई हो?"

"हां, प्रिय दादी, मैं आपकी बहन के पास से ही आई हूं."

"तो फिर, मैं तुम्हारी मदद करूंगी. यह सुनहरी सुई और चांदी का फ्रेम ले लो. सुई अपने आप काम करती है और चांदी और सोने के धागे से लाल मखमल पर कढ़ाई करती है. अगर वे इसे खरीदना चाहें तो उसे मत बेंचना - उनसे कहना कि बदले में तुम फेनिस्ट बाज़ को देखना चाहोगी."

मर्युष्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चली गई. जंगल में गड़गड़ाहट, और सीटियों की आवाज़ आई, और खोपड़ियों पर मुकुट एक अजीब सी रोशनी से चमकने लगे. मर्युष्का डर गई थी. तभी एक कुत्ता दौड़ता हुआ उसके पास आया.

"भौं-भौं मर्युष्का, डरो मत, प्रिय, आगे भी मुश्किलें आएंगी लेकिन तुम आगे बढ़ना और कभी पीछे मुड़कर मत देखना."

तो यह बोलकर कुत्ता चला गया. मर्युष्का आगे चली, और जंगल गहरा होता गया, और फिर पेड़ों और झाड़ियों ने उसके घुटनों को खरोंच दिया और उसकी आस्तीन को पकड़ लिया. लेकिन फिर भी वो आगे बढ़ती गई और उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा.

वो काफी देर तक चली या थोड़ी देर, यह किसी को नहीं पता, लेकिन आख़िर में लोहे के जूतों की तीसरी जोड़ी भी घिस गई, तीसरी लोहे की छड़ी भी टूट गई और तीसरी लोहे की टोपी भी फट गई. मर्युष्का जंगल में एक घास के मैदान में आई और उसने मुर्गियों के पैरों पर एक छोटी सी झोपड़ी देखी, जिसके चारों ओर पीले रंग की मूर्ति थी और वहां पर पीले रंग के घोड़ों की खोपड़ियां चमक रही थीं.

मर्युष्का ने कहा:

"छोटी झोपड़ी, छोटी झोपड़ी, कृपया अपनी पीठ पेड़ों की ओर और अपना चेहरा मेरी ओर करो."

झोपड़ी ने अपनी पीठ पेड़ों की ओर कर ली और अपना चेहरा मर्युष्का की ओर कर लिया, और फिर मर्युष्का उसके अंदर चली गई. और वहाँ बाबा-यगा नाम की चुड़ैल बैठी थी.

बाबा-यगा ने मिर्युष्का को देखा और वो बुदबुदाई:

"अरे वाह, रूसी खून, जो मुझे पहले कभी नहीं मिला, अब मुझे अपने दरवाजे से उसकी गंध आ रही है. वहां कौन आया है? कहां से? और वो कहां जा रही है?"

"मैं फेनिस्ट बाज़ की तलाश कर रही हूं, दादी प्रिय."

"उसे ढूंढना कोई आसान काम नहीं है, मेरी सुंदर लड़की, लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूंगी. यह चांदी की छड़ी और यह सुनहरी तकली लो. तकली को अपने हाथों में पकड़ो और फिर वो अपने आप घूमेगी और उसमें से सोने का धागा बाहर निकलेगा."

"धन्यवाद, दादी."

"अपना धन्यवाद बाद तक के लिए सुरक्षित रखो और अब ध्यान से मेरी बात सुनो. यदि वे सोने की तकली खरीदना चाहें, तो उसे नहीं बेंचना बल्कि उनसे कहना कि वे तुम्हें फेनिस्ट बाज़ को देखने दें."

मर्युष्का ने बाबा-यगा को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चली गई. जंगल में गर्जन, गड़गड़ाहट, और सीटियां बजने लगीं. उल्लू गोल-गोल घूमने लगे और चूहे अपने बिलों से रेंगकर सीधे मर्युष्का की ओर दौड़े. तभी एक भेड़िया दौड़ता हुआ उसके पास आया.

भेड़िए ने कहा:

"डरो मत, मर्युष्का. तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और कभी पीछे मुड़कर मत देखना."
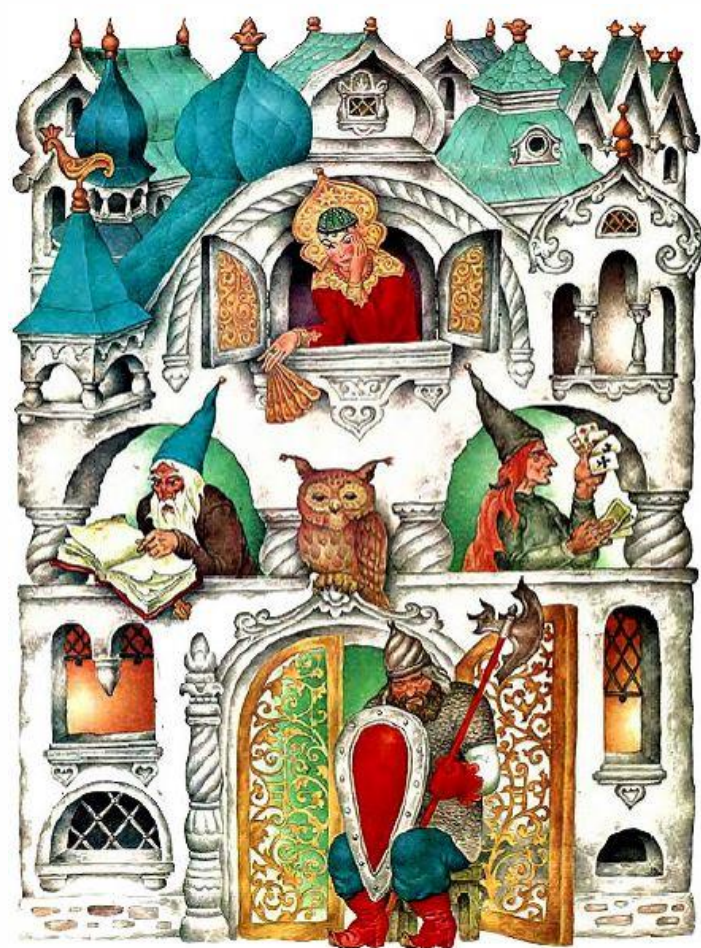
मर्युष्का भेड़िये की पीठ पर चढ़ गई और वे तेजी से आगे चले. वे विस्तृत सीढ़ियों और मखमली घास के मैदानों से गुज़रे, उन्होंने जेली बैंकों के साथ शहद की नदियों को पार किया और वे बादलों को छूने वाले ऊंचे पहाड़ों पर चढ़ गए. मर्युष्का को अपनी पीठ पर बिठाकर भेड़िया आगे-आगे दौड़ता रहा और वो नक्काशीदार बरामदे और खिड़कियों वाले एक क्रिस्टल महल तक पहुंच गया. और वहां ज़ारित्सा स्वयं खिड़की से बाहर देख रही थी.

"हम अब अपनी मंज़िल पर पहुंच गए हैं मर्युष्का," भेड़िये ने कहा. "मेरी पीठ पर से उतरो और अंदर जाओ और महल में नौकरानी के रूप में कोई काम खोजो."

मर्युष्का जमीन पर उतरी उसने अपना बंडल उठाया और भेड़िये को धन्यवाद देते हुए महल में चली गई. वो ज़ारित्सा के पास गयी, झुकी और बोली:

"क्षमा करें, मैं आपका नाम नहीं जानती, लेकिन क्या आपको एक नौकरानी की ज़रूरत है?"

"हां, मुझे पता है," ज़ारित्सा ने उत्तर दिया. "मैं लंबे समय से एक नौकरानी की तलाश में थी. लेकिन उसे कताई, बुनाई और कढ़ाई करने में सक्षम होना चाहिए."

मर्युष्का ने कहा, "मैं वो सब काम कर सकती हूं."

"तो फिर अंदर आओ और काम पर लग जाओ."
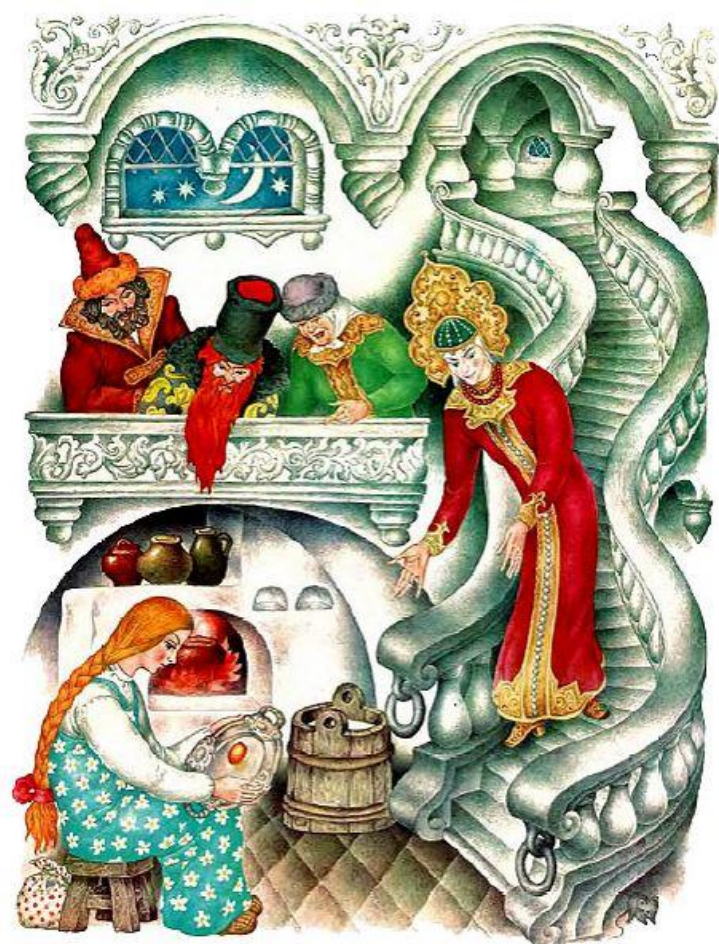
और इस प्रकार मर्युष्का वहां महल में एक दासी बन गई. उसने पूरे दिन काम किया, और जब रात हुई तो उसने अपना सोने का अंडा और चांदी की तश्तरी निकाली और कहा:

"लुढ़को, लुढ़को, सुनहरे अंडे, चांदी की तश्तरी के ऊपर, और मुझे अपने फेनिस्ट, मेरे प्रिय से मिलवाओ."

और सुनहरा अंडा चांदी की तश्तरी पर लुढ़का, और उस पर फेनिस्ट बाज़ प्रकट हुआ. मर्युष्का ने उसकी ओर देखा और उसके आंसू तेजी से बहने लगे.

"फेनिस्ट, मेरे फेनिस्ट, तुमने मुझ बेचारी को आंसू बहाने के लिए अकेला क्यों छोड़ दिया?"

ज़ारित्सा ने उसकी बात सुनी और कहा:

"मुझे अपनी चांदी की तश्तरी और सोने का अंडा बेच दो, मर्युष्का."

"नहीं," मर्युष्का ने उत्तर दिया, "वे बिक्री के लिए नहीं हैं, लेकिन यदि आप मुझे फेनिस्ट बाज़ को देखने देंगी तो आप उन्हें मुफ़्त में ले सकती हैं."

ज़ारित्सा ने कुछ देर सोचा और फिर उसने कहा:

"बहुत अच्छा, अभी ऐसे ही रहने दो. आज रात, जब वो सो जाएगा, मैं तुम्हें उसे देखने दूंगी."
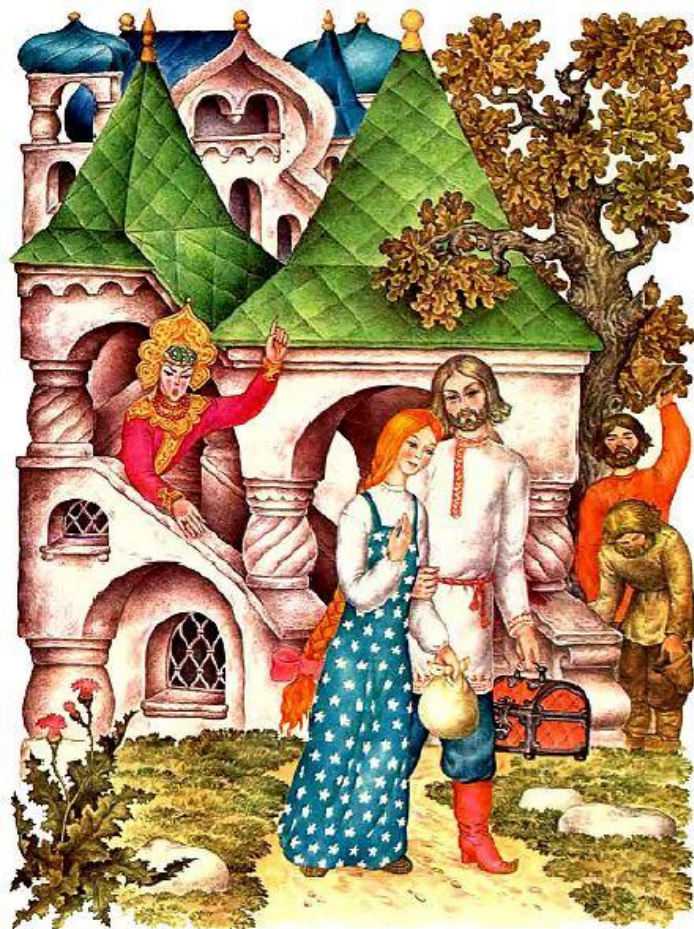
रात हुई, और मर्युष्का अपने कक्ष में गई और उसने फेनिस्ट बाज़ को देखा. उसका प्रेमी गहरी नींद में सोया हुआ था और उसे जगाया नहीं जा सकता था. वो उसे देखती रही और देखती रही पर देखने से उसका मन नहीं भरा, और उसने उसके मीठे गाल को चूमा और उससे चिपक गई, लेकिन वो सोता ही रहा और नहीं उठा. सुबह हो गई, लेकिन फिर भी मर्युष्का अपने प्रिय को नहीं जगा सकी.

पूरे दिन उसने काम किया और फिर शाम को उसने अपना चांदी का फ्रेम और सुनहरी सुई निकाली. वो वहीं बैठ गई और सिलाई करने लगी और उसने कहा:

"कढ़ाई करो, छोटे तौलिए, जिससे मेरे फेनिस्ट बाज़ को सुबह अपना चेहरा पोंछने के लिए कुछ मिल जाए."

ज़ारित्सा ने उसकी बात सुनी और कहा:

"तुम मुझे चांदी का फ्रेम और सुनहरी सुई बेच दो, मर्युष्का."

"नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती," मर्युष्का ने उत्तर दिया, "लेकिन यदि आप मुझे फेनिस्ट बाज़ को देखने देंगी तो आप उन्हें मुफ़्त में ले सकती हैं."

ज़ारित्सा ने कुछ देर सोचा और फिर उसने कहा:

"बहुत अच्छा, अभी ऐसा ही रहने दो. तुम आज रात उससे मिलने आ सकती हो."

रात हुई, और मर्युष्का अपने कक्ष में गई और उसने देखा कि फेनिस्ट बाज़ वहां गहरी नींद में लेटा हुआ था.

"हे मेरे फेनिस्ट, मेरे बहादुर और सुंदर बाज़, उठो, जागो!" उसने कहा.

लेकिन फेनिस्ट हमेशा की तरह गहरी नींद में सोता रहा, और मर्युष्का उसे तमाम कोशिशों ने बाद भी जगा नहीं सकी.

भोर होते ही मर्युष्का काम पर लग गई और उसने अपना चांदी की छड़ी और सोने का तकली निकाली. और ज़ारित्सा ने उसे देखा और उससे उन्हें बेचने की भीख मांगने लगी. लेकिन मर्युष्का ने कहा:

"नहीं, वे बिक्री के लिए नहीं हैं, लेकिन यदि आप मुझे फेनिस्ट बाज़ को देखने देंगी तो वे आपको मुफ़्त में मिल सकते हैं."

"बहुत अच्छा," ज़ारित्सा ने कहा, और उसने मन में सोचा: "वो उसे वैसे भी कभी जगा नहीं पाएगी."

रात होने लगी और मर्युष्का अपने कक्ष में चली गई, लेकिन फेनिस्ट हमेशा की तरह गहरी नींद में लेटा और सोता रहा.

"हे मेरे फेनिस्ट, मेरे बहादुर और सुंदर बाज़, उठो, जागो!" उसने कहा.

लेकिन फेनिस्ट सोता रहा और नहीं उठा.

मर्युष्का ने उसे जगाने की बार-बार कोशिश की, लेकिन वो उसे नहीं जगा सकी. और जल्द ही सुबह होने वाली थी. वो फूट-फूट कर रोने लगी और बोली:

"फेनिस्ट, प्रिय फेनिस्ट, मेरे प्रिय, उठो और अपनी आंखें खोलो, अपनी मर्युष्का को देखो, उसे अपने दिल के करीब दबाओ!"

और मर्युष्का का गर्म आंसू फेनिस्ट के नंगे कंधे पर गिर गया और उसने उसे जगा दिया. फेनिस्ट बाज़ हड़कंप में उठा और उसने अपनी आंखें खोलीं और मर्युष्का की ओर देखा. उसने उसे अपनी बाहों में ले लिया और चूमा.

"क्या तुम मेरी मर्युष्का हो सकती हो? तो तुमने तीन जोड़ी लोहे के जूते घिसे हैं और तीन लोहे की छड़ें तोड़ दी हैं और तीन लोहे की टोपियाँ फाड़ दी हैं? अब और मत रोओ. चलो अब घर चलते हैं." वे घर की ओर यात्रा के लिए तैयार होने लगे, लेकिन ज़ारित्सा ने उन्हें देख लिया और अपने तुरही बजाने वालों को आदेश दिया कि वे उसके पति की बेवफाई की खबर पूरे देश भर में फैलाएं.

फिर उसके देश के राजकुमारों और व्यापारियों ने एक साथ आकर परिषद आयोजित की और निर्णय लिया कि फेनिस्ट बाज़ को कैसे दंडित किया जाए.

और फेनिस्ट बाज़ खड़ा हुआ और बोला:

"आपको क्या लगता है कि सच्ची पत्नी कौन है, वो जो मुझे पूरे दिल से प्यार करे या वह जो मुझे बेचे और धोखा दे?"

और सभी को इस बात से सहमत होना पड़ा कि उसकी सच्ची पत्नी मर्युष्का थी.

इसके बाद वे अपने देश को लौट गये. उन्होंने वहां एक दावत का आयोजन किया, और वो आयोजन इतना भव्य था कि उसे आज भी याद किया जाता है, और उनकी शादी में बंदूकें चलाई गईं और सभी तुरही बजाई गईं. उस दिन से वे प्रेम और प्रसन्नता में रहने लगे.